सार्थक उपलब्धि - २०१३

दि न्यू मिरज एज्युकेशन सोसायटी संचालित,

कन्या महाविद्यालय, मिरज एवं

महाराष्ट्र राज्य हिंदी अकादमी के सहयोग से आयोजित

महाराष्ट्र हिंदी परिषद का २९ वाँ अधिवेशन एवं द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

दि. २३ एवं २४ दिसंबर

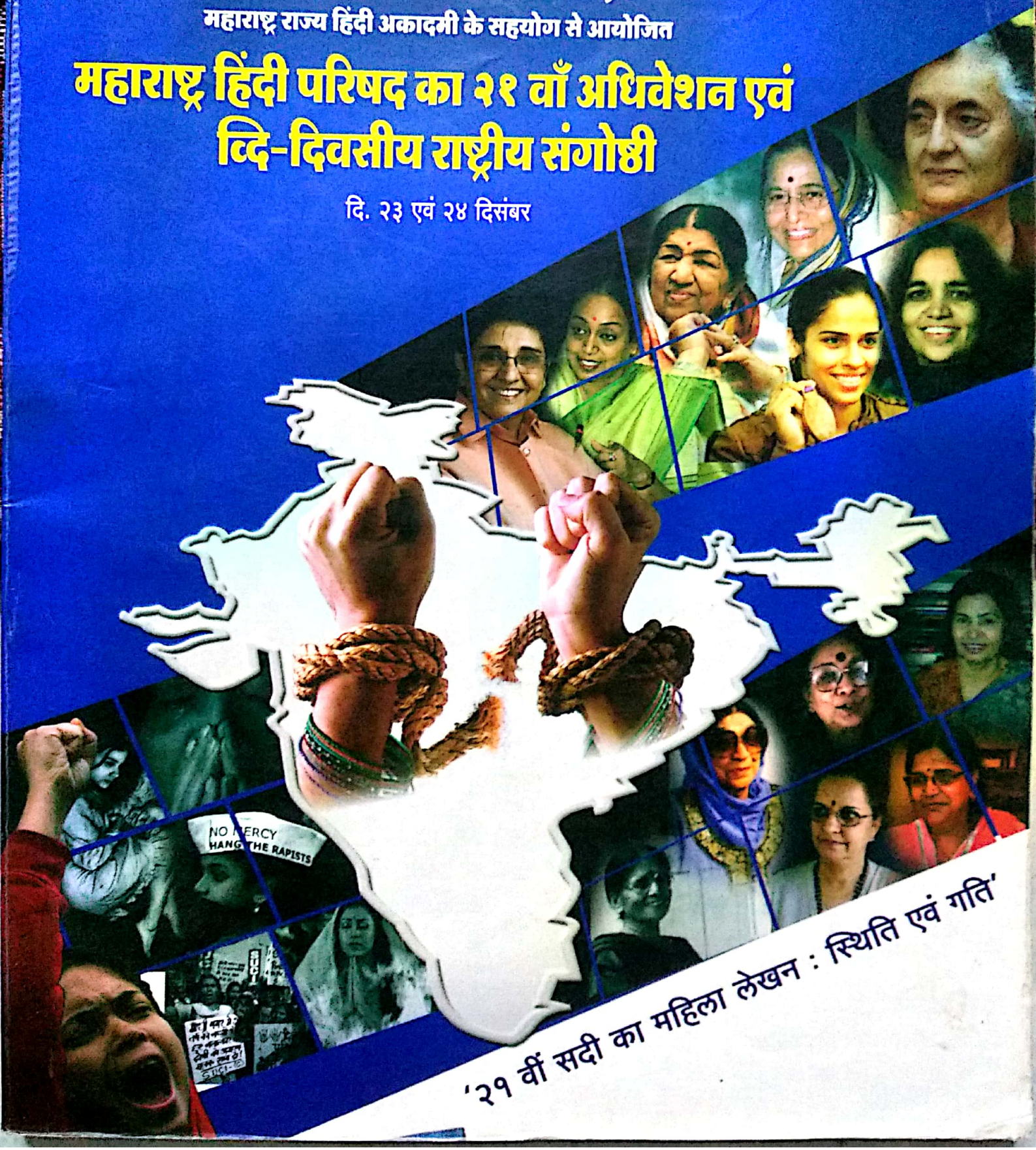

'२१ वीं सदी का महिला लेखन : स्थिति एवं गति'

Scanned with CamScanner

- प्रभा खेतान की 'पीली आंधी' परंपरा और आधुनिकता का मिलाप — प्रा. प्राजक्ता जोशी — ८५
- २१ वीं सदी का महिला लेखन : स्थिति एवम् गति (उपन्यास के संदर्भ में) — प्रा. स्नेहा प्रसाद पाटील — ८८
- इक्कीसवीं शती के हिंदी उपन्यासों में नारी-विमर्श — कोळेकर संतोष वसंत — ९१
- २१ वीं सदी महिला लेखन : उपन्यास विधी के संदर्भ में — प्रा. अमलपुरे सूर्यकांत विश्वनाथराव — ९३
- भूमंडलीकरण : दौड ओनली रेस! — प्रा. रगडे पी. आर — ९६

२१ वीं सदी का महिला लेखन : स्थिति और गति
कहानी साहित्य के संदर्भ में

- इक्कीसवीं सदी में महिला लेखन : स्थिति एवं गति (विशेष संदर्भ : कहानी साहित्य) — प्रा. डॉ. पुष्पलता अग्रवाल — १०१
- इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानियों में नारी — प्रा.डॉ. बी.डी. पाटील — १०६
- मृत स्त्री के शारीरिक बलात्कार का सच — डॉ. शोभा एम. पवार — १०९
- २१ वीं सदी का महिला लेखन (नारी मन की कहानियों के संदर्भ में) — डॉ. शैलजा रमेश पाटील — १११
- इक्कीसवीं सदी का महिला लेखन : स्थिति एवं गति (कहानी साहित्य के विशेष संदर्भ में) — प्रा.डॉ. प्रकाश शंकरराव चिकुर्डेकर — ११३
- स्त्री विमर्श के परिप्रेक्ष्य में 'दूसरा ताजमहल' — डॉ. विजय महादेव गाडे — ११५
- इक्कीसवी सदी की कहानियों में प्रतिबिंबित पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन की दशा एवं दिशाएँ — डॉ. भारती शेळके — ११८
- २१ वीं सदी का महिला लेखन : स्थिति एवं गती (कहानी के संदर्भ में) — डॉ.श्रीमती सुरेखा बाळासाहेब शहापुरे — १२३
- कहानीकार गीताश्री का हिंदी साहित्य में योगदान — प्रा.डॉ. चित्रा मिलिंद गोस्वामी — १२६
- मानवीय सरोकारों से जुड़ी कहानियाँ - दुलहिन — डॉ. स्वाती नरेश नारखेडे — १२८
- इक्कीसवीं सदी में स्त्री कथाकारों की चुनौतियाँ — प्रा.डॉ. पंडित बन्ने — १३१
- मधु काँकरिया की कहानियों में नारी-चित्रण — प्रा. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा — १३३
- ''२१ वीं सदी का महिला लेखन : कहानी के संदर्भ में।'' — प्रा. दत्तात्रय महादेव साळवे — १३६
- ''मैत्रेयी पुष्पा के 'चिन्हार' कहानी संग्रह में नारी चित्रण'' — प्रा.डॉ. उषा रविन्द्र सपकाळे — १३८
- 'पच्चीस साल की लड़की' — डॉ. हेमलता श्याम पाटील(माने) — १४२
- २१ वीं सदी का महिला लेखन : स्थिति एवं गति- कहानी साहित्य के संदर्भ में — डॉ. सौ. काटे हेमलता विजय — १४५
- मृदुला गर्ग की कहानियों में नारी- संवेदना — प्रा.डॉ. -ज्ञानेश्वर गाडे — १४७
- इक्कीसवीं सदी का महिला लेखन : स्थिति एवं गति (कहानी विशेष के संदर्भ में) — श्री. जयसिंग मारुती कांबळे — १४९

२१ वीं सदी का महिला लेखन : स्थिति और गति
नाट्य - साहित्य के संदर्भ में

- बाल नाटक विधा में शशिप्रभा श्रीवास्तव का योगदान — डॉ. संजयकुमार शर्मा — १५१
- २१ वीं सदी का महिला लेखन : नाट्य साहित्य के संदर्भ में — प्रा. महिपती जगन्नाथ शिवदास — १५४
- २१वीं सदी का महिला लेखन - स्थिति एवं गति — डॉ. शाहीन अब्दुल अजीज पटेल — १५६

Scanned with CamScanner

मधु काँकरिया की कहानियों में नारी-चित्रण

प्रा. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,
यावल.

बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में महिला लेखन अत्यंत तीव्रता से उभरकर सामने आया। विशेषकर हिंदी कथा-साहित्य में महिलाओं को केंद्र में रखकर कई उपन्यास एवं कहानियाँ लिखी गईं। जिनके माध्यम से नारी-जीवन के विविध पक्षों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया। नारी पर होनेवाले अन्याय-अत्याचार, शारीरिक और मानसिक शोषण, अस्तित्व बोध, आर्थिक स्वावलंबन, समानता का अधिकार, दहेज की समस्या आदि तमाम बातों का चित्रण हिंदी कथा-साहित्य में किया गया।

इक्कीसवीं सदी के प्रारंभ में स्त्रियों के विभिन्न प्रश्नों पर हिंदी कथा साहित्य में महिला लेखिकाओं ने नए सिरे से विचार-विमर्श प्रारंभ किया हैं। उन्होंने नारी जीवन से संबंधित सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक, मनोवैज्ञानिक आदि आयामों को दृष्टि में रखकर अनुपम साहित्य लेखन उपन्यासों एवं कहानियों के माध्यम से किया है। इन महिला लेखिकाओं में मन्नु भंडारी, मालती जोशी, प्रभा खेतान, उषा प्रियंवदा, ममता कालिया, शिवानी, मेहरून्निसा परवेज, मृदुला गर्ग, कृष्णा सोबती, मैत्रेयी पुष्पा, सूर्यबाला, सुनीता जैन, राजी सेठ इन लेखिकाओं के साथ ही मधु काँकरिया का लेखन अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता हैं। सूर्यबाला के अनुसार - 'अनुभव यही कहता है कि लेखिकाओं का क्षेत्र अधिकतर घर और नारी मन रहा है जबकि पुरूष लेखन का घर बाहर दोनों। लेकिन हम इस क्षति की पूर्ति भी तो कर लेती हैं। नारी मन की अथाह गहराइयों में पैठकर इतना तो मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि नारी के अंदर इतने गूढ़, तिलस्म, गुफाएँ और प्राचीर हैं कि इन्हें भेद पाना आसान नहीं, जिनको स्त्री जितनी सत्यता और ईमानदारी से भेद सकती है - पुरूष नहीं।''१

मधु काँकरिया ने अपने कथा साहित्य में अपनी अनुभूतियों को बेबाक तरीके से अभिव्यक्त किया हैं। उन्होंने कथा-साहित्य में सदियों से चली आ रही दहेज प्रथा, बालविवाह, विधवा जीवन, वेश्या जीवन आदि विभिन्न पहलुओं का चित्रण किया हैं। इन्हीं समस्याओं का चित्रण मधु काँकरिया की कहानी 'चूहे को चूहा ही रहने दो' ,'एक रूकी हुई स्त्री', 'दाखिला', 'आसमान कितनी दूर', 'कुल्ला' आदि में नारी चित्रण दिखाई देता है। प्राचीन काल की नारी की तुलना में आज की आधुनिक नारी काँकरिया की कहानियों में विद्रोह करती हुई दिखाई देती हैं।

मधु काँकरियाँ के कुल तीन कहानी-संग्रह प्रकाशित हो चुके है। इनमें पहला कहानी-संग्रह ''भरी दोपहरी के अँधेरे'' में चूहे को चूहा ही रहने दो कहानी में कहानी की नायिका युवती अपने पति से प्रतिशोध लेना चाहती है कि, वह पति की पतिव्रता पत्नी नहीं रहीं। अपने मन की भड़ास निकालना चाहती है। क्योंकि पति ने उस पर कई बंधन डाल रखे थे। किसी हम उम्र इन्सान से बात तक करने को वह तरस जाती थी। इन्हीं परिस्थितियों के कारण कहानी की युवती अपने पति से बगावत करती है। कहानी में स्वयं युवती कहती है कि, इससे आगे बढ़ना मेरे एजेण्डा में नहीं था। आज की रात मेरे प्रतिशोध की रात थी।२

कहानी की नायिका दूसरे युवक को आमंत्रित कर जब चरमोत्कर्ष के क्षणों में खुद को उस ऐंद्रिय जाल में मुक्त कर लेती है तब युवती का प्रतिशोध कहीं न कहीं उसे आत्मसम्मान

Scanned with CamScanner

लौटाता हैं।

इस कहानी में मधु काँकरिया ने एक स्त्री की आंतरिक पीड़ा को बड़ी ही सजीवता से चित्रित किया है। उसके अंतर्द्वन्द्व का यह चित्रण शायद ही पहले कभी हुआ हो। पति के दबाव में जीती स्त्री का एक उन्मुक्त कदम। संवेदनशील मन को झकझोर देनेवाली यह कहानी हैं। यह कहानी एक नारी के मन का ज्वलंत चित्रण हैं।

मधु काँकरिया का दूसरा कहानी संग्रह 'बीतते हुए', में 'एक रूकी हुई स्त्री' कहानी में नायिका मानसी प्रेम में पागल एक ऐसी लड़की है, जो सालों अपने प्रेम को पाने के इंतजार में गुजार देती हैं। मेड़िकल की पढ़ाई करते-करते मानसी और सरबजीत प्रेमी-प्रेमिका बन जाते हैं। मानसी होनहार, प्रतिभासंपन्न, उच्चशिक्षित होने के बावजूद प्रेम में सबकुछ समर्पित कर देती हैं। अपने प्रेमी के लिए मर मिटने को तैयार होकर अपना करियर तक दाँव पर लगा देती है। इसके विपरित सरबजीत अपने जीवन में करियर को महत्त्व देता है। इसलिए सरबजीत मानसी को छोड ऑल इंडिया मेडिकल इन्स्टिटयूट दिल्ली चला जाता हैं। इसके संदर्भ में मधु कहानी में लिखती है कि , ''यहाँ स्त्रियाँ बलात्कार की उतनी नहीं जितनी धोखे का शिकार होती है।''३

मानसी सरबजीत से धोखा खाने के बाद भी अपने प्रेमी की राह देखती है। इस प्रकार आखिर तक मानसी सरबजीत के प्रेम के लिए तड़पती हैं।

इस कहानी में मानसी अपने सर्वस्व को हासिल करने के लिए 'एक रूकी हुई स्त्री' जीवन के कितने ही अंतराल के बाद भी उस व्यक्ति के लिए रूकी हैं। क्या सचमुच उसके जीवन में भी बहाव आयेगा यह सोचने पर मजबूर करनेवाली की यह कहानी नारी के संवेदनशील मन का चित्रण करती हैं।

इसी कहानी संग्रह की कहानी 'दाखिला' में सुकीर्ति नामक युवती की व्यथा का चित्रण हैं। सुकीर्ति की व्यथा यह है कि उसका पति उसे छोड़कर चला गया है। वह अपने बेटे विक्रम को अच्छे स्कूल में दाखिला दिलाना चाहती हैं। अपने बेटे के लिए तड़पती माँ अपने भाई को ही पति बनाकर स्कूल में ले जाती हैं। किन्तु अपने बेटे को लाख सिखाने के बाद भी बेटा उसे पापा की जगह मामा कहकर पुकारता है और सारा मामला बिगड़ जाता है। सुकीर्ति सोचती है कि उसके इस होशियार-होनहार, कर्तव्यदक्ष बेटे को केवल उसकी वजह से स्कूल में दाखिला नहीं मिला तो वह अपने आपको कभी माफ नहीं कर पायेगी। कॉन्वेंट स्कूलों में दाखिले के वक्त माता-पिता दोनों का होना जरूरी होने के कारण दो-तीन बार उसका प्रयत्न असफल हो जाता हैं। इन सभी परिस्थितियों को देखता विक्रम अपनी माँ से कहता है कि, ''इस बार तुम गड़बड़ नहीं करना। इंटरव्यू रूम में घुसते ही कह देना फादर को पापा हमारे साथ नहीं रहतें, नहीं तो पिछले इंटरव्यू की तरह इस बार भी मेरा दाखिला नहीं हो पायेगा''।४

'सुकीर्ति' कहानी की नायिका की व्यथा अन्य नारियों से भिन्न हैं। लेखिका ने इस कहानी में परित्यक्ता नारी की समस्या का चित्रण किया है। एक परिवार, सुखी परिवार जीवन में कितना मायने रखता है कि बेटे को स्कूल में दाखिला दिलवाने के लिए उसे झूठ तक का सहारा लेना पड़ता है। अकेली स्त्री का जीवन बड़ा ही कठिन और संघर्ष से भरा होता हैं।

इसी कहानी-संग्रह की कहानी 'आसमान कितनी दूर' में मंदा नामक स्त्री की छोटी-सी ख्वाहिश का चित्रण हैं। शादी से पहले ही सुहागरात का सपना सँजोए मंदा जब भैरोसिंग के घर आती है तो उसकी ख्वाहिश यही है कि सुहागरात के लिए एक पलंग खरीदूँ। लेकिन उसका यह सपना अधूरा रह जाता हैं। वह अपने पारिवारिक समस्याओं में इतनी उलझ जाती है कि अपने बेटे और बेटियों की शादी तक करा देती हैं। मंदा की बड़ी बेटी मंगला द्वारा यह सपना पूरा होने ही जा रहा था कि, बेटी की सौगात स्वीकार करना मंदा के पति भैरोसिंग की संस्कृति में नहीं था। किन्तु बेटी के आग्रह खातिर उन्होंने पलंग तो रख लिया, पर मंदा के लिए नहीं पुत्रवधू के लिए जिसपर मंदा एक-बार लेटने की ख्वाहिश रखती हैं। इसी ख्वाहिश के कारण जब वह पलंग पर लेटती है तब उसे एहसास होता है कि, ''कितना अपूर्व लग रहा था....जमीन से तीन फिट ऊँचा उठकर सोना। शरीर का अंग-अंग जैसे इस

Scanned with CamScanner

अद्भुत अनुभूति से अभिभूत था। विश्वास ही नहीं हो रहा था कि सचमुच वह ही सोई है पलंग पर। इसी एक पल के लिए जाने कितने स्वप्न देखे थे उसने''।५

मंदा के द्वारा कहानी में मधु काँकरिया ने नारी के संवेदनशील रूप को चित्रित किया हैं। लेखिका ने इस कहानी में प्रस्तुत किया है कि, एक सामान्य किशोरी का सामान्य सपना उम्र के पड़ाव तक पूर्ण नहीं होता। परिवार के भरण-पोषण, कल्याण में वह अपने आपको ढ़ाल देती है। इसका सजीव चित्रण हुआ हैं।

मधु काँकरिया का तीसरा कहानी-संग्रह 'और अंत में ईशु' है। इस संग्रह की कहानी 'कुल्ला' में नारी का चित्रण व्यक्त हुआ है। इसमें नायिका प्रमिला को पति द्वारा हीनता से भरा बर्ताव मिलता है। दाम्पत्य जीवन में जहाँ पति-पत्नी दोनों एक-दूसरे के जीवन के रथ के पहिए होते हैं। प्रमिला पति के प्रेम में अपना सर्वस्व लुटा देने को तैयार। परंतु नयी ब्याहता पत्नी के साथ उसका पति उसके साथ आक्रोशपूर्ण व्यवहार करता हैं। प्रमिला पति का दिल जीतने के लिए बड़ चाव से पति के लिए रसोई में कुछ पका ही रही थी कि उसकी पीठ पर पीछे से टूथपेस्ट के झाग का कुल्ला पति के ही द्वारा मारा जाता है। जूठे कुल्ले से प्रमिला खौल उठती हैं। अपमान से थरथराई वह पति पर बरस पड़ती है। प्रमिता सोचती है, कि, ''इश्श.....किस कूड़ेदान की अर्चना करती रही वह भी। कहाँ कंचन-सी उसकी काया और कहाँ यह मूढ़ कुल्ला।''६ इस प्रकार प्रमिला के माध्यम से नारी चेतना पर कहानी में मधु काँकरिया ने प्रकाश डाला हैं। सदियों से चली-गली परंपराओं से घिरी नारी अब अपने व्यक्तित्व को पहचानने लगी है। अपना आत्मसम्मान खोना उसे कतई गँवारा नहीं।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि मधु काँकरिया ने अपनी कहानियों में नारी को केंद्र में रखकर अनेक समस्याओं का चित्रण किया है। समस्याओं के इस चित्रण में उन्होंने नारी के अनेक रूपों का चित्रण किया है। नारी चरित्रों का यह स्वरूप कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण हो गया हैं। ''सुखद आश्चर्य यह है कि लेखिका केवल व्यक्तिगत-आंतरिक धरातल तक ही सीमित नहीं है - परिवेश, समाज व्यवस्था और नगरीय सभ्यता के प्रति भी काफी सचेत इनकी यह विशेषता निश्चित रूप से प्रशंसनीय है। नारी-पुरूष संबंधों में भी ये अपने ढंग से मुखर हुई है। लज्जा, संकोच, दब्बूपन को त्याग शारीरिक और मानसिक सुख, अधिकार, स्वतंत्रता की मांग की है और शाब्दिक छल से नफरत की है।''७

मधु काँकरिया ने नारी जीवन के अनेक पहलुओं को न केवल उजागर किया है अपितु आधुनिक मूल्यों और मान्यताओं की दृष्टि से उसे जांचा और परखा भी है। आज की नारी की मन:स्थितियों का अंकन करते हुए वे उसके माध्यम से पारिवारिक, सामाजिक और नैतिक मूल्य की टूटन और बिखराव को व्यक्त करती हैं।

संदर्भ सूची

१) समकालीन महिला लेखन - डॉ. ओमप्रकाश शर्मा, पृ. २५ से उद्‌धृत

२) चूहे को चूहा ही रहने दो (भरी दोपहरी की अँधेरे) - मधु काँकरिया, पृ. २५

३) एक रूकी हुई स्त्री (बीतते हुए) -मधु काँकरिया, पृ. १७४

४) दाखिला (बीतते हुए) - मधु काँकरिया, पृ. १४७ -

५) आसमान कितनी दूर (बीतते हुए) - मधु काँकरिया, पृ. १४०

६) कुल्ला (और अंत में ईशु) - मधु काँकरिया, पृ. ९७

७) सत्तोतरी हिंदी कविता : संवेदना, शिल्प और कवि - डॉ. मनोा सोनकर, पृ. ६०२

Scanned with CamScanner